सतत् विकास की संकल्पनाः पर्यावरण एवं आधुनिक विकास के बीच सामंजस्य–संतुलन

अजय राजपुरोहित*

"अन्तिम वृक्ष को काट दिये जाने के बाद.....
अन्तिम नदी को विषाक्त करने के बाद......
अन्तिम मछली पकड़ लिये जाने के बाद......
हम पाएंगे कि पैसे को खाया नहीं जा सकता है"

उपयुक्त वाक्य पर्यावरण, वन एवं जलवायु मंत्रालय, भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट 2020–21 के मुख्य पृष्ठ पर अंकित है। ये सतत् विकास की आवश्यकता को बेहतर ढंग से निरूपित करते हैं। ये संदेश देते हैं कि आर्थिक प्रगति तभी संपोषणीय हो सकती है, जब पर्यावरण और विकास में बेहतर संतुलन हो। सतत् विकास उसे कहते हैं जिसमें भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने की योग्यता से कोई समझौता किए बगैर अपनी वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। सतत् विकास वास्तव में साधन सम्पन्न लोगों की तुलना में साधनहीन लोगों तथा वर्तमान पीढ़ी से अधिक भावी पीढ़ी को महत्त्व देता है।

भारत सतत् विकास को बढ़ावा देने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय समझोतो एवं अभिसमयों का अनुपालन करने में कभी पीछे नहीं हटा है। भारत ने जलवायु परिवर्तन सम्बन्धित संयुक्त राष्ट्र रूपरेखा अभिसमय (UNFCCC) पर हस्ताक्षर किया है। भारत ने जैव–विविधता सम्बन्धी अभिसमय (CBD)पर भी हस्ताक्षर किया है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत न केवल अपने नागरिकों की जीवन गुणवत्ता में सुधार के प्रति प्रतिबद्ध है, बल्कि सतत् विकास के लिये अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ मिलकर सक्रिय भी है। भारत में गरीबी निवारण के लिये कई लक्षित योजनाओं कार्यक्रमों एवं नीतियों की शुरूआत की गई है। या तो प्रत्यक्ष रूप से रोजगार सृजन, प्रशिक्षण या गरीबों के लिये परिसम्पत्तियों के निर्माण पर ध्यान दिया जा रहा है। या अप्रत्यक्ष रूप से मानव विकास विशेषकर शिक्षा स्वास्थ्य एवं महिला सशक्तिकरण पर बल दिया जा रहा है। वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। वन, प्रदूषण नियन्त्रण, जल प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, स्वच्छ ऊर्जा, समुद्री एवं तटीय पर्यावरण से सम्बन्धित विभिन्न नीतियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

राष्ट्रीय पर्यावरण नीति, 2006 स्वच्छ पर्यावरण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। पर्यावरण से जुडी चिन्ताओं को दूर करने में राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण अधिनियम, 2010 (NGT)काफी महत्त्वपूर्ण साबित हो रहा है। प्राकृतिक संसाधनों के क्षय एवं पर्यावरणीय गुणवत्ता में गिरावट के रूप में पर्यावरणीय चुनौती बनी हुई है जबकि जलवायु परिवर्तन जैसी नई चुनौतियाँ भी उभर रही है। इन चुनौतियों का समाधान करके ही सतत् विकास की प्राप्ति की जा सकती है जिसमें उचित सरकारी नीतियों के साथ–साथ नागरिकों गैर–सरकारी संगठनों, स्थानीय प्राधिकरणो तथा व्यापारिक एवं औद्योगिक समूहों की भागीदारी महत्त्वपूर्ण होगी। यंत्रों, स्वच्छ तकनीकों विज्ञान एवं अर्थव्यवस्था संचालित पद्धतियों तथा विकेन्द्रीकृत उपागमों को अपनाने से आर्थिक विकास गरीबी उन्मूलन में सक्षम होगा और तभी यह सामाजिक रूप से समावेशी तथा पारिस्थितकीय रूप से टिकाऊ होगा।

सतत् विकास की संकल्पना

सतत् विकास के लिए आज विश्व के सभी देश सहमत एवं प्रयासरत हैं, सतत् विकास की अवधारणा में तीन तत्वों की परस्पर अन्तःक्रिया सम्मिलित होती है।

1. पर्यावरण
2. समाज
3. आर्थिक प्रणाली

- जब हम पर्यावरण एवं समाज के बीच परस्पर अन्तःक्रिया और अन्तर सम्बन्धों की बात करते हैं तो ये सम्बन्ध स्वस्थ होने चाहिए।
- इसी प्रकार पर्यावरण और आर्थिक प्रणाली के बीच सम्बन्धों के फलस्वरूप उचित परिणाम उत्पन्न होने चाहिए।
- समाज और आर्थिक प्रणाली परस्पर कुशल एवं दक्षतापूर्ण सम्बन्धों पर केन्द्रित होनी चाहिए।

*व्याख्याता, Drishti IAS संस्थान (जयपुर एवं दिल्ली)

- इस प्रकार परस्पर स्वस्थ, उचित एवं दक्षतापूर्ण अन्तरसम्बन्ध टिकाऊ अवस्था को उत्पन्न करते हैं। इस प्रक्रिया को निम्न रेखाचित्र के माध्यम से समझा जा सकता है।

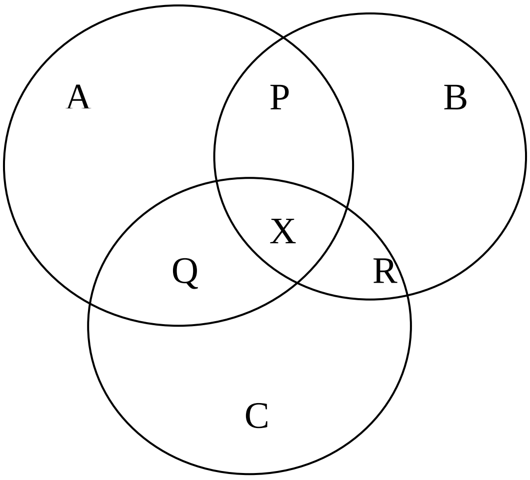

A = समाज
B =पर्यावरण
C = आर्थिक प्रणाली
P = स्वस्थ
Q = उचित
R = दक्षतापूर्ण
X = टिकाऊ अवस्था

A + B = समाज. पर्यावरण = स्वस्थ
B + C = पर्यावरण. आर्थिक प्रणाली = उचित
A + C = समाज. आर्थिक प्रणाली = दक्षतापूर्ण
= X – टिकाऊ विकास

सतत् विकास के उद्देश्य

- गरीबी निवारण एवं सतत् आजीविका
- पर्यावरण अनुकूल मानवीय गतिविधियाँ
- ऊर्जा दक्षता
- प्राकृतिक अवसरों का विकास
- नवीकरणीय संसाधनों पर निर्भरता

सतत् विकास के मूलभूत विचार

- नवीकरणीयता–नवीकरणीय संसाधनों का उपयोग धारणीय आधार पर थे ताकि किसी भी स्थिति में उपभोग की दर पुनर्सृजन की दर से अधिक न हो।
- **प्रतिस्थापन(Substitution)-**संसाधनों की अपक्षय दर नवीनीकृत प्रतिस्थापकों से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- **अंतनिर्भरता(Interdependence)**–एक सम्पोषणीय समाज वह होता है जो न तो ऐसे संसाधनों का आयात करता है जिससे सम्बन्धित वंचना का शिकार हो जाए और न ही अपने यहाँ उत्पन्न प्रदूषकों का अन्य समाजों का स्थानान्तरण करता है।
- **अनुकूलशीलता(Adaptability)**–एक सतत् विकास रूप से विकासशील समाज बदलते पर्यावरण के अनुसार खुद को बदलने की क्षमता रखता है। ऐसा वह नई–नई तकनीकों और शोध–आविष्कारों आदि के माध्यम से करता है।
- **संस्थागत प्रतिबद्धता(Institutional Commitment)-**इसके अन्तर्गत वे सभी नीतियाँ, संवैधानिक प्रावधान, राजनीतिक इच्छा शक्ति कानूनी रूपरेखा और वैधानिक संस्थाओं के बीच आपसी समन्वय आते हैं जिसके बिना सतत् विकास को वास्तविक रूप से सम्भव नहीं बनाया जा सकता है।
- **पारम्परिक ज्ञान एवं व्यवहार**–लगभग हरेक क्षेत्र में कुछ ऐसे पारम्परिक तरीके मौजूद होते हैं जो पर्यावरण अनुकूल होने के साथ–साथ सर्वसुलभ होते हैं।

- **पर्यावरण हितैषी नवीन तकनीकों का प्रयोग**–आजकल कई ऐसी तकनीकी और प्रक्रियाएँ है जिसका प्रयोग कर न केवल हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे हैं बल्कि भविष्य के लिए भी संसाधनों को सुरक्षित कर रहे हैं।
- **जनसंख्या वृद्धि को कम करना**–जनसंख्या वृद्धि से संसाधनों पर दबाव बढ़ता है। जिससे संवृद्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जो सतत् विकास की दृष्टि से उचित नहीं है।
- **पारिस्थितिकी संरक्षण**–सतत् विकास के लिये यह सबसे आवश्यक है कि वन संसाधनों जैव विविधता तथा अन्य पर्यावरणीय घटकों का न केवल संरक्षण किया जाये बल्कि उसका परिवर्द्धन भी किया जाए।
- **स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शासन को मजबूत बनाना**–संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन के लिये सभी संबंधित पक्षों की भागीदारी अनिवार्य होती है। स्थानीय स्तर लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत बनाने से प्राकृतिक संसाधनों का बेहतर एवं टिकाऊ प्रबन्धन होता है।

सतत् विकास के मानक(Parameters of Sustainable Development)

सतत् विकास हो रहा है या नहीं इसके लिये मुख्यतः निम्न मानक बनाए गए हैं–

- अन्तर–पीढ़ीगत समता (Inter-Generational Equity)–इसका सम्बन्ध विभिन्न पीढ़ियों के बीच प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण और अनुकूलतम उपयोग से है।
- विकल्पों का संरक्षण(Conservation of Options)-प्रत्येक पीढ़ी को यह चाहिये कि वह प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों का संरक्षण और परिवर्द्धन इस तरीके से करे कि आगामी पीढ़ियों के पास यह विकल्प मौजूद हो।
- अधिशेष का संरक्षण(Conservation of Excess)–प्रत्येक पीढ़ी को अपनी पिछली पीढ़ियों से मिली प्राकृतिक विरासत का अनुकूलतम उपयोग करना चाहिए और बचे हुए संसाधनों को आगामी पीढ़ियों के लिए संरक्षित कर देना चाहिए।

सतत् विकास प्राप्त करने के लिए रणनीतियाँ

- **ऊर्जा के गैर–पारम्परिक स्रोतों का उपयोग**–विभिन्न देश अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अभी भी बड़े पैमाने पर थर्मल पॉवर प्लांट पर निर्भर हैं। जिससे कार्बन डाई ऑक्साइड जैसी ग्रीन हाउस गैसे निकलती है जो गलोबल वार्मिंग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसका सीधा–सा समाधान यह है कि हम ऊर्जा के गैर पारम्परिक स्रोतों पर अपनी निर्भरता बढ़ाये। इन स्रोतों में सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल विद्युत ऊर्जा, भू–गर्भिय ऊर्जा, सागर तरंग से उत्पादित ऊर्जा आदि प्रमुख है।
- **स्वच्छ घरेलू ईंधन**–विश्व में अभी भी आधे से अधिक आबादी घरेलू ईंधन के रूप में लकड़ी कोयले इत्यादि का उपयोग करती है जो स्वास्थ्य और पर्यावरणीय दृष्टि से काफी हानिकारक है। इसलिए ईंधन के रूप में एल.पी.जी., सी.एन.जी. जैसे स्वच्छ ईंधनों के प्रयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है तभी प्रदूषण में कमी के साथ–साथ धारणीय विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है।

सतत् विकास हेतु भारत के प्रयास

- राष्ट्रीय सौर मिशन।
- ऊर्जा दक्षता को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय मिशन।
- सतत् अधिवास पर राष्ट्रीय अभियान।
- राष्ट्रीय जल अभियान।
- हिमालय पारितन्त्र को बनाए रखने के लिये राष्ट्रीय अभियान।
- 'हरित भारत' के लिए राष्ट्रीय अभियान।
- संपोषणीय कृषि के लिए राष्ट्रीय अभियान।
- संपोषणीय कृषि के लिये राष्ट्रीय अभियान।
- जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी रणनीतिक ज्ञान के लिए राष्ट्रीय अभियान।

सतत् विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समझौते

- ❖ पृथ्वी शिखर सम्मेलन–1992 रियो–डी–जेनेरियो
  लक्ष्य–एजेंडा–21 सतत् विकास हेतु वैश्विक कार्ययोजना
- ❖ रियो. 10 (जोहांसबर्ग सम्मेलन), 2002
  लक्ष्य–इस सम्मेलन में एजेंडा–21 के पूर्ण क्रियान्वयन के लक्ष्य को फिर से दोहराया गया।

❖ रियो. 20 (रियो–डी जेनेरियो, ब्राजील) 2012

(सतत् विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन 2012 के पृथ्वी सम्मेलन का फोकस मुख्य तीन तथ्यों पर था–

1. गरीबी में कमी लाना
2. स्वच्छ ऊर्जा
3. सतत् विकास जिसमें सामाजिक–आर्थिक विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण भी शामिल होता है ताकि भावी पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किये बिना वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहे।

सतत् विकास के लक्ष्य के तहत् 17 नए लक्ष्य

विकास एजेंडा अंगीकृत करने के लिये न्यूयॉर्क में सितम्बर, 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की उच्च स्तरीय बैठक में नए एजेंडा के निर्णायक दस्तावेज को औपचारिक तौर पर अंगीकृत करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के इस सतत् विकास शिखर सम्मेलन में दुनिया भर से 150 से अधिक देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने हिस्सा लिया।

सतत् विकास के लिए सामान्य रूप से निम्नलिखित सुझाव दिये गये हैं–

1. प्रत्येक क्षेत्र में पर्यावरणीय मुद्दों पर शोध कार्य किए जाए।
2. वानिकी का संघन कार्यक्रम निरन्तर चले।
3. पर्यावरणउ सन्तुलन एवं पारिस्थितिकीय सन्तुलन के प्रयास।
4. हरित जीवन पद्धति को बढ़ावा।
5. स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्धक, कार्य दशाओं की स्थापना।
6. गैर–परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के प्रयोग को प्रोत्साहन।
7. पर्यावरणीय मित्र उत्पादों का प्रचलन एवं उपभोग को बढ़ावा।
8. पर्यावरण तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी का सरल एवं सहज हस्तांतरण।
9. जैविक उर्वरकों एवं जैविक कृषि के प्रयोग को बढ़ावा।
10. पर्यावरण शिक्षा को स्कूल–कॉलेज पाठ्यक्रम का अहम अंग बनाया जाए।
11. पर्यावरण प्रबन्धन एवं पारिस्थितिकीय अंकेक्षण को अनिवार्य किया जाए।
12. पर्यावरण मुद्दों का सामाजीकरण एवं मानवीयकरण करने की आवश्यकता।
13. संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत् विकास कार्यक्रम एजेण्डा–21 का सभी देशों में क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. मेहता, प्रो. एस. सी., सतत विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2013
2. अवस्थी, अमरेश्वर और अवस्थी, आनन्द प्रकाश, पर्यावरण व विकास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, 2013
3. महिपाल, सतत विकास– चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली–110070, 2013
4. डॉ. अनिता, सतत विकास के लिए मंथन, इन्दिरा गाँधी पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास संस्थान, जयपुर, 2013
5. डॉ. सतीश सहारण, राजस्थान पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम पंचायत एवं विकास के कृत्य एवं शक्तियाँ, इन्दिरा गाँधी पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास संस्थान, जयपुर, 2013
6. कुरूक्षेत्र हिन्दी मासिक, "विकास सशक्तिकरण" सतत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, द्वारा प्रकाशित वर्ष 59, अंक 7, मई 2013